ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

सूचना क्रान्ति : समाज और संस्कृति

जीतेन्द्र रादडिया
पत्रकारत्व भवन
सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research E-Journal

प्रस्तावना :

भारत जैसे उदारवादी व विकासशील देश के संदर्भ में जहां सूचना माध्यमों ने खासी प्रगति तो की है पर उनका उपयोग समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व समझ विकसित करने की बजाए संस्कृति के हास व महज कौतूहल जगाने में हो रहा हो, वहां अज्ञेय का यह कथन सटीक बैठता है । सूचना व संचार क्रान्ति को मानव सभ्यता की सबसे बड़ी क्रान्ति माना जा रहा है और इसके द्वारा जो परिवर्तन हुए उन्होंने कई मायनों में औद्योगिक क्रान्ति तक को फीका साबित कर दिया है । लेकिन यह भी उतनी ही सच्चाई है कि सूचना क्रान्ति और भूमण्डलीकरण की मदद से उभरी इस विश्व व्यवस्था में असंतोष और अस्थिरता के तत्त्व विद्यमान है और ये दिनों - दिन प्रखर होते जा रहे हैं । दूसरी तरफ सूचना क्रान्ति का पक्षधर तबका मानता है कि औद्योगिक समाज सूचना समाज में रूपांतरित होने जा रहा है और कुछ विकसित देश तो पहले ही सूचना समाज में तब्दील हो चुके हैं । लेकिन सवाल यह उठता है कि इस क्रान्ति का मूल स्वभाव और चरित्र क्या है ? समाज और संस्कृति पर इसके प्रभाव किस तरह के हैं ? इस क्रान्ति का विज्ञान, विकास से किस तरह का सरोकार है?

सूचना प्रौद्योगिकी : समाज - संस्कृति :

कम्प्यूटर और दूरसंचार प्रौद्योगिकियों के विलय के उपरान्त ही सूचना क्रान्ति का वर्तमान स्वरूप और आकार संभव हो पाया । हाल के वर्षों में उपग्रहों के माध्यम से सीधे प्रसारण ने सांस्कृतिक आवागमन को सीमाविहीन बना दिया है । केबल टेलीविजन तथा दूरसंचार और कम्प्यूटर की नई प्रौद्योगिकियों ने इसे कहीं अधिक शक्तिशाली बना दिया है । इस तरह की स्थिति बड़े पैमाने पर सूचना कुपोषण और प्रदूषण को जन्म दे रही है । सूचना क्रान्ति की भूमिका लोकोन्मुखी नहीं है । अव्वल तो यह है कि संचार क्रान्ति के रथ पर सवार सूचना क्रान्ति भारत में ढिबरी और लालटेन से प्रकाशित घरों के लिए नहीं है । जहां तक इसकी उपलब्धता है वह एक अलग किस्म की सामाजिक विपन्नता पनपा रही है । सूचना समाज में सूचनाओं की बहुलता निश्चय ही है । लेकिन यह दावा गलत है कि यह सूचग सबकी पहुँच में है । इसका पहला कारण तो यही है कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा सूचना समाज से बाहर है । फिर सूचना ऐसा संसाधन है जिसमें उपयोग के लिए उन्नत स्तरीय बौद्धिक और प्रबन्धन की कुशलता की जरूरत होती है जो उन तबकों के पास पयाल रूप से नहीं है । इस कारण एक बड़े वर्ग में कुठा और हताशा व्याप्त हो रही है ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research E-Journal

सांस्कृतिक प्रवाह के खतरे :

सूचना क्रान्ति के जरिए आ रहे सांस्कृतिक प्रवाह के आगे भारत जैसे विकासशील देश नतमस्तक हैं । सांस्कृतिक रूप से यह प्रवाह एकतरफा है । बड़े पैमाने पर अमरीका और अन्य पश्चिमी देशों से मीडिया उत्पादों का विकासशील देशों में निर्यात किया जा रहा है । पशिम का यह सांस्कृतिक प्रवाह इतना तीव्र है कि विश्व भर में अनेक संस्कृतियां इसे झेल पाने में अपने आपको असमर्थ पा रही है । इस तरह विश्व की सांस्कृतिक विविधता नष्ट हो रही है । संस्कृतियों की सृजनशीलता का ह्रास हो रहा है और पश्चिमोन्मुख बहुराष्ट्रीय संस्कृति अपना आधिपत्य कायम कर रही है । अधिकांश विकासशील देशों में विकसित देशों की भांति मीडिया में मनोरजन का तत्त्व ही प्रभुत्वकारी है । जबकि सच्चाई यह है कि विकसित और विकासशील देशों की सूचना आवश्यकताएं एकदम भिन्न है । मनोरंजन की पश्चिमी अवधारणाएं प्रबल हो रही हैं ।

भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के टेलीविजन माध्यम को स्वदेशी संस्कृति के प्रति उन्मुख न बनाना एक आश्चर्य की बात है । वहीं इंटरनेट के मायाजाल से अब कम्प्यूटर मध्यमवर्गीय लोगों के हाथों का खिलौना है । इंटरनेट सम्पन्न तबकों की सूचनाओं की जरू तों का आवश्यकता से अधिक पूर्ति करना है । भविष्य में इसके उपभोक्ता भी अपनी निर्धारित और एक हद तक विस्तृत की गई रुचियों के अनुसार मीडिया सामग्री प्राप्त कर सकेंगे भीड जाएगी जो पड़ोस के बारे में अनभिज्ञ हों लेकिन व्हाइट हाउस की तमाम जानकारियां रखते हों । सांस्कृतिक क्षेत्र में सूचना क्रान्ति सबसे विनाशक साबित हो रही है । महानगर से नगर, कस्बा और गांव तक बाजार के हमले हैं । सब कुछ तो बदल रहा है, खान - पान , रहन - सहन, आपसी रिश्ते - नाते । अब गांवों में भले ही पीने का साफ पानी न मिले लेकिन बंद शीतल पेय और आइसक्रीम जरूर मिल जाएगी । यह वही भारतीय गांव है जहां कभी बरगद के पत्तों पर दूध की ठंडी मलाई बिकती थी । सीधी - सादी जीवनधारा पर भी सूचना क्रान्ति का फंदा पहुंच चुका है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सूचना प्रौद्योगिकी :

एक अनुमान के अनुसार मानव सभ्यता ने पिछले 30 वर्षों में जितना वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त किया है, वह उसके सम्पूर्ण इतिहास का 80 प्रतिशत है । इस ज्ञान में सबसे अधिक हिस्सा सूचना प्रौद्योगिकी का है । दूरसंचार और उपग्रह प्रौद्योगिकी की मदद से यह लाखों - लाख कम्प्यूटरों का एक ऐसा सूचना तंत्र है, जिसमें पूरी की पूरी लाइब्रेरियां और रेडियो, टेलीविजन, चैनल, समाचार - पत्र, पत्रिकाएं और अन्य अनेक तरह की जानकारियां साधन - सम्पन्न लोगों के लिए उपलब्ध है ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research E-Journal

सूचना क्रान्ति से ही आज यह सम्भव हो पाया कि जहां पहले सूचनाओं और जानकारियों को एकत्र करने के लिए एक क्षेत्र तैयार करना पड़ता था, आज उससे भी कहीं अधिक सूचनाएं एक छोटी सी चिप सुरक्षित रखी जा सकती हैं और कम्प्यूटर की मदद से पल भर में मनचाही सूचना को निकाला जा सकता है वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले दर्शनशास्त्री जे. डी. बरनाल ने कहा था - विज्ञान अभी मुख्य रूप से दुनिया के उस रूप का विश्लेषण करता रहा है जिसका वजूद मनुष्य आने से पहले था । विज्ञान अभी मनुष्य के कृत्यों का विश्लेषण नहीं कर रहा लेकिन तो शुरुआत है । मनुष्य ने जिस संसार की रचना की है उसका अध्ययन भी जरूरी है ।

बरनाल के अनुसार - चिन्तन के सिद्धान्त और व्यवहार की कठिनाइयां उन समस्याओं निहित है जिन्हें मानव समाज ने अर्थशास्त्र, समाजविज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में खुद पैदा किया भविष्य में गैर - मानवीय शक्तियों पर विजय पूर्ण हो जाएगी तब इन समस्याओं का महत्व और बढ़ जाएगा । मनुष्य की मुक्ति और उसके आनन्द के लिए विज्ञान (संचार माध्यम समेत) की नई भूमिका तलाशी जा सकती है लेकिन इसके लिए पहले सामाजिक व्यवस्था बदलनी होगी । इस संदर्भ में बरनाल की टिप्पणी है कि हम इतना कह सकते हैं कि यदि विज्ञान को मुनाफा कमाने की मंशा से मुक्त कर दिया जाए तो यह हमारी खुशियां बढ़ाने में भी उतना ही उपयोगी होगा जितना वह भौतिक उत्पादन में है । तब मनोरजन को और अधिक भावनात्मक, वैयक्तिक तथा विविध बनाया जा सकता है । विज्ञान के जरिए रचनात्मक अवकाश का भी विकास किया जा सकता है । स्वतः स्फूर्त व्यक्तियों के समग्र प्रयास से नई जिम्मेदारियां सामने आ सकती है ।

विकास के निमित्त विज्ञान :

विकास की यह दिशा जा कहां रही है ? सम्भवतः वह समय आ गया है जब विश्व स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों को मिलकर विकास के कुछ ऐसे ठोस प्रस्ताव तैयार करने होंगे जिनकी मदद से विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों तथा उपादानों को सीधे - सादे सामाजिक विकास से जोड़ा जा सके तथा उन्हें विकास के एजेंडा में शामिल कर नई उपलब्धियां हासिल की जा सकें । हमें सुनिश्चित करना होगा कि हमारे विकास के एजेंडा में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को स्थान मिला है या नहीं । अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस बात की पड़ताल करनी होगी लाकि जरूरतमंदों तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को पहुंचाया जा सके । आज तीसरी दुनिया के विभिन्न देशों में आमजन के बीच फैली गरीबी, निरक्षरता, कुपोषण, भुखमरी को दूर करने तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं एवं शिक्षा को प्रभावशाली ढंग से मुहैया कराना जरूरी है ।

भारत में सबसे पहले इस की जरूरत है कि स्थानीय आवश्कताओं को ध्यान में रखकर नई

तकनीकों की खोज की जाए तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसका विकास किया जाए जो आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर आधारित तो हों ही, साथ ही साथ ग्रामीण इलाकों की गरीब जनता की मूल आवश्यकताओं का भी पूरा करती । यह सामुदायिक विकास को न केवल सुनिश्चित करेगा बल्कि विकास के नए द्वार खोलने में भी पूर्णतः सक्षम होगा ।

निष्कर्ष :

एकतरफा सूचना क्रान्ति और प्रौद्योगिकी ने बेशक समाज , संस्कृति को खासा नुकसान पहुँचाया है लेकिन यदि इस प्रभावशाली हथियार का उपयोग मानव सभ्यता के हित में हो तो क्रान्तिकारी बदलाव आ सकते हैं । जरूरत इस बात की है कि विज्ञानियों और मीडिया से जुड़े लोगों के संयुक्त प्रयास से देश के लिए उचित और प्रासंगिक नीतियों का निर्माण किया जाए । इससे मानव जीवन की पुरानी समस्याओं के साथ - साथ नई समस्याओं का भी समाधान किया जा सकता है ।

विकसित देशों में वैज्ञानिक शिक्षा के बारे में जानना और देश की आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें ग्रहण करना भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है । इसके लिए सभी शोध संस्थानों तथा शोध गतिविधियों को ऐसी परियोजना की ओर लगाना होगा जहां हम अपने आज तक के अर्जित विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की चेष्टाओं को विकास की नीतियों के साथ जोड़कर कार्य कर सकें । इसके लिए उच्च स्तर की विज्ञान सलाहकार समितियां गठित करनी होगी जिसमें हर क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल हों और जिनकी संवेदनाएँ आम जनता के भविष्य के साथ जुड़ी हुई हों भारत में ग्रामीण जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरी प्रौद्योगिकी विकसित करने की पूरी क्षमता है, ऐसी नीतियां बनाने वाले विशेषज्ञ भी मौजूद हैं जिनके पास नवीन अवधारणाओं की कोई कमी नहीं है परन्तु कमी है तो ऐसे चमत्कारी व्यक्तित्व वाले राजनेताओं की जो सभी दबावों से मुक्त होकर कारगर नीतियां बना सकें और इनको कार्यान्वित कर राष्ट्र विकास के द्वार खोल सके । इस सारी बहस के सन्दर्भ में मैथिलीशरण गुप्त की रचना ' भारत भारती ' इसी चेतना के क्षेत्र की चुनौती को निम्न शब्दों में वाणी देती है

सन्दर्भ सूची

1. सूचना क्रान्ति की राजनीति और विचारधारा, सुभाष धूलिया, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली।
2. संस्कृति विकास और संचार क्रान्ति, पूरनचन्द्र जोशी, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली।
3 . चिन्तन - सृजन : सम्पादन, बी.बी. कुमार, आस्था भारती, दिल्ली ।
4. साक्षात्कार , सितम्बर 2001